खिलाफ विचहंटिंग होगी। ऐसा नहीं होगा, यह हम आपसे आश्वासन चाहते हैं।

श्री राजेश पायलट: महोदय, मैंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि चाहे मदरसा हो, चाहे पाठशाला हो, चाहे शिशु मंदिर हो या चाहे विद्यालय हो, यह सब पढ़ाई के मकसद से खोले जाते हैं और जरूरी हैं। सरकार द्वारा प्राइवेट ऑरग्नाइज़ेशंस खोले जाते हैं। लेकिन किसी भी स्थल को इसका अड्डा नहीं बनने दिया जाएगा, जहां कट्टरपंथी विचारधारा को बढ़ाकर देश के सैक्यूलरिज्म को दूर करने की बात की जाए। चाहे मदरसा हो या विद्यालय हो, हमारे लिए दोनों चीज़े बराबर हैं और सरकार का फर्ज है कि ऐसी विचारधारा को न पनपने दे और सरकार इस संबंध में कटिबद्ध है।

Census of Wildlife Animal

*145. SHRIMATI VEENA VERMA:†
SHRI SUSHIL MUMAR SAMBHAJI RAO SHINDE:

Will the Minister of ENVIRONMENT AND FORESTS be pleased to state:

(a) whether census of wild cats, lions, tigers, leopards, panthers and others has been lately held in different wildlife sanctuaries in the country;

(b) if so, when it was last conducted in each sanctuary and what are the comparative figures for each species of animals; and

(c) the yearly rate of growth these figures depict; sanctuary-wise?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS (SHRI KAMAL NATH): (a) Census of major endangered animals are conducted by the States once in four years and in tiger reserves once in two years.

(b) and (c) Last general census of wild animals in major wildlife areas was carried out in 1993. The sanctuary-wise details of wild animal population is not mainted by the Central Government. However, the comparative figures of major wild animals as per 1989 & 1993 census are as under:

		1989	1993	Average Annual Growth Rate (%)
1.	Tiger	4334	3750	(−) 3.36
2.	Elephant	17000—22000	22000—27000	(+) 5.68
3.	Lion	284 (1990)	304 (1995)	(+) 1.40
4.	Leopard	6763	6828	(+) 0.24
5.	Rhinoceros	1591	1496	(−) 1.49
6.	Brow-antlered deer	64	98	(+) 13.28

SHRI SUSHILKUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE: Sir, I am on a point of order. My question was whether a census of wild cats...

MR. CHAIRMAN: There is not point of order during Question Hour.

† The Question was actually asked on the floor of the House by Shrimati Veena Verma.

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: क्वेश्चन ऑवर में प्वाइंट ऑफ आर्डर कब से होने लगा है?.....**(व्यवधान)**

SHRI SUSHILKUMAR SABHAJIRAO SHINDE: I am on a point of information. *(Interruptions)*

MR. CHAIRMAN: Your turn will come.

SHRI SUSHILKUMAR SAMBHAJIRAO SHINDE: My question was about wild cats...

MR. CHAIRMAN: I will call you when your turn comes.

श्रीमती वीणा वर्मा: माननीय मंत्री जी, मैं पूछना चाहती हूं कि आपने आंकड़े दिए हैं, इसमें चीते की संख्या के आंकड़े नहीं दिये हैं।

श्री दिग्विजय सिंह: दिए हैं।

श्रीमती वीणा वर्मा: मेरी जानकारी के अनुसार नहीं दिये हैं। चीता वाइल्ड लाइफ से खत्म होता जा रहा है। टाइगर भी खत्म हो रहे हैं। यह हमारे देश की सम्पदा है। हमने मनुष्यों पर तो ध्यान ज्यादा देना शुरू कर दिया है पर जानवरों पर ध्यान देना कम कर दिया है। धीरे-धीरे फारेस्ट खत्म होते जा रहे हैं। अच्छा होता कि चीतों की संख्या भी देते। अभी हाल में मध्य प्रदेश को टाइगर स्टेट घोषित किया गया है, उसके लिए मध्य प्रदेश सरकार और मंत्री जी आप बधाई के पात्र हैं। आपने वाइल्ड लाइफ की जो संख्या दी है, उसके अनुसार संख्या बढ़ी है, मध्य प्रदेश में भी टाइगर की संख्या बढ़ी है, चीतों की भी संख्या बढ़ी है, लेकिन जैसे-जैसे वाइल्ड लाइफ को हमने प्रोटैक्शन देना शुरू किया है, टाइगर प्रोजैक्टस् शुरू किये हैं वैसे-वैसे पोचिंग बहुत बड़े स्तर पर शुरू हो गयी है और हो रही है। टाइगर को बचाने में या जिंदा रखने में कम पैसा खर्च होता है और उसके अंग बेचने के लिए बहुत बड़े स्तर पर व्यापार होता है। एक टाइगर के रख-रखाव में ज्यादा खर्च नहीं आता पर 25 लाख रुपये का एक टाइगर बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली में बिकता है, उसके पार्ट्स बिकते हैं। उसकी खाल बिकती है, नाखून बिकते हैं और उसके वाइटल ऑरगेन्स बिकते हैं, बहुत बड़ी संख्या में हड्डियां भी बेची जा रही हैं। पुरुष लोग उसके नाखून गले में पहनते हैं, मांस की धूनी दी जाती है, स्किन भी बहुत बड़ी संख्या में बेची जाती हैं और अभी बहुत से मामले पकड़े गये हैं। इसमें खास तौर से तिब्बती लोग इनवॉल्व हैं। महोदय, पहले तो टाइगर को गोली से मारा जाता था, शिकार किया जाता था पर अब दवा देकर, पैस्टीसाइड देकर या बिजली के खुले तारों से करंट देकर उसे मारा जाता है, शॉक देकर मारा जाता है। तो अब आप इस पोचिंग को रोकने के लिए, जो ट्रांसपोर्ट ट्रेड का जरिया बन चुका है, क्या कार्यवाही करने जा रहे हैं और ग्लोबल टाइगर कोरम जो 14 देशों को मिलाकर एक योजना बनी थी, उसमें आपको कहां तक सफलता मिली है, वह बताने का कष्ट करें।

श्री कमलनाथ: महोदय, हमारे देश में 88 नैशनल पार्क हैं और लगभग 440 सैंचुरीज़ हैं जो 1.42 लाख स्क्वेयर किलोमीटर कवर करती हैं यह बात सही है कि जो टाइगर पोचिंग का प्रैशर है, यह बढ़ता जा रहा है। यह इसलिए बढ़ता जा रहा है कि जो हमारे टाइगरों की संख्या है, वाइल्ड लाइफ की संख्या है, वह बढ़ती जा रही है और जो हमारा हैबिटाट है, जो हमारा प्रोटेक्टेड एरिया है उसको हम नहीं बढ़ा पा रहे हैं। जब आबादी बढ़ती है टाइगर की, जब आबादी बढ़ती है वाइल्ड लाइफ की तो साथ-साथ उसका एरिया भी बढ़ना चाहिए लेकिन वह नहीं बढ़ता, टाइगर पोचिंग या अन्य पोचिंग ज्यादा आसान हो जाता है। साथ-साथ साऊथ-ईस्ट-एशियन कंट्रीज में टाइगर मेडिशनल फार्मुलेशन, टाइगर की दवाइयां बनाई जाती थीं उसका व्यापार बढ़ रहा है। टाइगर को मारना बहुत प्रोफिटेबल होने लग गया था इसीलिए हमने तीन साल पहले इसको देखते हुए टाइगर स्ट्रैक फोर्स बनाई, टाइगर क्रैसिस सेल बनाया। इससे हमने पोचर्स को पकड़ना शुरू किया इसलिए, नहीं कि यह ज्यादा संख्या में हो रहे हैं बल्कि बात यह है कि अब इन्हें ज्यादा पकड़ा जा रहा है। जो हमारा प्रोजेक्ट टाइगर है उसको और मजबूती देने के लिए अन्य चीजें कराई गई हैं। माननीय सदस्या ने पूछा ग्लोबल टाइगर फोरम के बारे में। विश्व में इस बारे में चिंता प्रकट की गई थी। टाइगर जो अपने देश में है केवल टाइगर क्योंकि टाइगर है इसलिए इसकी वेल्यू नहीं है बल्कि टाइगर के साथ इसका जो हैबिटाट है इसका जो इको सिस्टम होता है, कम्पलीट इको सिस्टम होता है इस इको सिस्टम को बचाने के लिए, टाइगर को बचाने के लिए भी इसकी आवश्यकता है। ग्लोबल टाइगर फोरम है और अन्य देश हैं जो टाइगर स्टेट्स कहलाये जाते हैं उनके साथ एक समझौता किया है। ग्लोबल टाइगर फोरम के जो नियम और नीतियां हैं ये देश उसका रेक्टीफिकेशन कर रहे हैं।

श्रीमती वीणा वर्मा: मैं यह कहना चाहती हूं कि टाइगर स्टेट्स में टाइगर को रिजर्व रखने के लिए क्या पालिसी है? अभी पिछले 8-9 महीने पहले करीब 8 हजार हेक्टेयर जमीन जो कि वाइटल टाइगर और लैपर्ड हेबिटाट की थी वह स्टेट गवर्नमेंट ने माइनिंग एक्टीविटीज के लिए दे दी। क्या यह सही है? यह पालिसी क्या है? दूसरे इसको खत्म करने के लिए आप

क्या कर रहे हैं? पहले 6 लाख एकड़ वन जमीन डोनेटिड
फोरेस्ट मध्य प्रदेश में है उसके लिए पैसा दिया जाता था लेकिन अब केन्द्रीय सरकार ने उसको पैसा देना बंद कर दिया है तो क्या इसको फिर से चालू करेंगे?

श्री कमल नाथ: यह बात सही नहीं है कि मध्य प्रदेश में कोई ऐसा नेशनल पार्क या प्रोजेक्ट टाइगर एरिया में से भूमि माईनिंग के लिए दी गई है। अगर ऐसी कोई बात राज्य सरकार में हुई है तो माननीय सदस्या मेरी जानकारी में लायें तब इसमें उचित कार्रवाई की जायेगी।

जहां तक प्रश्न है प्राइवेट फोरेस्ट को राशि दी जाती थी तो फोरेस्ट कंजरवेशन एक्ट में जो क्लासीफाइड फोरेस्ट हो या और किसी प्रकार की हो तो जो भी राशि अन्य राज्यों को दी जाती है इस दृष्टिकोण से दी जाती है कि उनका एरिया क्या है और उसमें कैसे काम होता है।

श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिन्दे: सभापति महोदय, एक बात मैंने पूछी थी जंगली बिल्लियों के बारे में। उसके बारे में यहां इन्होंने कुछ नहीं बताया। मैं यह पूछना चाहता हूं कि यह जो अभयारण्य हो रहा है, विशेषतः डीपीईपी की ओर से अभरयारण्य हर स्टेट में हो रहा है जिसकी वजह से हिरणों की संख्या बढ़ रही है। जो हिरण की संख्या बढ़ रही है उसकी वजह से जो नीयरबाई लेती है वहां के किसानों को बहुत बड़ी तकलीफ होती है। मैं सोलापुर के अभयारण्य के बारे में कहना चाहता हूं जिसका नाम नानज नार्थ सोलापुर, महाराष्ट्र है। शुरू में यहां पांच हिरण थे आज वहां कम से कम चार हजार हिरण हो गये हैं। इन्होंने वहां की खेती बिल्कुल खराब कर दी है। उसके प्रोटेक्शन के लिए फेंसिंग डालने का प्रयास आपको करना चाहिए या दूसरा कोई मार्ग निकालना चाहिए। इसका जल्दी से जल्दी उत्तर दे दीजिए प्रश्न का समय खत्म होने से पहले।

MR CHAIRMAN: The Question Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Construction of Double Decker Coaches

*142. SHRI S. AUSTIN: Will the Minister of RAILWAYS pleased to state:

(a) whether construction of double decker coaches has been discontinued;

(b) if so, the reasons therefor; and

(c) if not, the production programme for the same for the next five years and the requirement thereof?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C.K. JAFFER SHARIEF): (a) to (c) Prototype of double decker coaches were put on trials a few years back on few trains. Complaints were received regarding dust and noise pollution. Hence no regular production was taken up. Alternate designs of double decker coach are under development.

Working of National Human Rights Commission

*146. SHRI CHATURANAN MISHRA:
SHRI N. GIRI PRASAD:

Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether there are complaints that the National Human Rights Commission (NHRC) has been venturing into such fields as pollution of environment, lack of housing etc. instead of concentrating on violation of such human rights to look into for which it was primarily set up;

(b) whether Government have made any attempt to assess the achievements and failures of the NHRC and working of the Act; and

(c) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S.B. CHAVAN): (a) to (c) Government are aware of certain reports in the media, etc., in which views